लेखक का विनम्र निवेदन

आज दुनियाँ एक बड़े नाजुक और खतरनाक दौर से गुजर रही है। चारों ओर अशान्ति, हिंसा, स्वार्थ, विलासिता, अनैतिकता और भ्रष्टाचार के बादल मँडरा रहे हैं। ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण मानव जाति एक महा व्यापक विनाश की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रही है। मनुष्य ने वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा प्रकृति पर नियंत्रण और अधिकार प्राप्त कर अपने जीवन को अधिक सुखमय, शान्तिमय तथा समृद्धशाली बनाने की जो आशा की थी, वह आज घोर निराशा में परिणित हो रही है। ऐसे गम्भीर अशान्त वातावरण में कुछ महान चिंतनशील वैज्ञानिक भी यह सोचने के लिए बाध्य हो रहे हैं कि अब मनुष्य के सामने यह संकट की घड़ी आ गयी है कि यदि वह बाह्य प्रकृति तथा जड़ पदार्थों के आविष्कारों का पुनर्मूल्याकंन करके उनका केवल मानव कल्याण के लिए सदुपयोग नहीं करता तथा बाह्य भौतिक जगत से सम्बन्धित इन आविष्कारों के साथ ही साथ वह अपनी अन्तः प्रकृति अर्थात आत्मिक चेतना के स्वरूप को समझने तथा उसमें छिपी हुई असीम शक्ति को जाग्रत कर उसका सदुपयोग अपने सर्वांगीण जीवन को शाश्वत शान्ति तथा उच्च मानवीय आदर्शों की ओर अग्रसर करने में नहीं करता तो निकट भविष्य में सम्पूर्ण जड़-चेतन जगत का व्यापक विनाश निश्चित है।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गत साठ-सत्तर वर्षों में कुछ विद्वान अध्यात्मवादी साधकों तथा विवेकशील वैज्ञानिकों ने 'परमाणुशक्ति' तथा मानव चेतना में व्याप्त चित् शक्ति (जो उस परम सत्ता परमेश्वर की ही अभिन्न अंग है) के स्वरूप तथा स्वभाव में

विलक्षण समानताओं की ओर हम सभी का ध्यान आकर्षित किया है। इन तथ्यों के प्रकाश में यह आशा की जाती है कि इक्कीसवीं सदी के आरम्भिक दशकों में अध्यात्म विज्ञान तथा भौतिक-विज्ञान दोनों ही एक दूसरे के सहयोगी के रूप में कार्य करते हुए उक्त दोनों शक्तियों का (परमाणु शक्ति तथा चित्-शक्ति का) सम्पूर्ण जड़-चेतन जगत के कल्याण के लिए किस प्रकार सदुपयोग किया जाये, इस विषय पर गम्भीर अन्वेषण तथा प्रयोग करेंगे और तभी यह सम्भव है कि आज विश्व के विभिन्न देशें में परमाणु अस्त्रों की होड़ से जिस भयंकर तथा व्यापक विनाश की सम्भावनाएँ प्रकट हो रही हैं उनसे इस सम्पूर्ण विश्व को बचाने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

ईश्वर की दया से मानव के कल्याण के लिए ही संसार में समय-समय पर अवतारों, महान संतों तथा महात्माओं का जन्म हुआ, जिन्होंने मनुष्य को प्रेम, शान्ति, सेवा तथा ऐसे अनेक आदर्शों तथा आत्मा और परमात्मा के गूढ़तम रहस्यों का अनुभव कराते हुए उनके जीवन को चिरस्थाई शान्ति और सुख प्रदान करने की चेष्टा की। इन्हीं महापुरुषों और परम सन्तों के बतलाये मार्ग को हम धर्म या मत के नाम से पुकारते हैं। परन्तु आज जब मनुष्य इस अशान्त और अनैतिक वातावरण से ऊब कर किसी धर्म की ओर निहारता है तो उसे वहाँ भी दिखावा, पाखंड, आत्मप्रशंसा तथा खुदी का ही पसारा दिखलाई पड़ता है। हर धर्म यही दावा करता हुआ नज़र आता है कि केवल उसके द्वारा ही सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण होगा और इसीलिए समय-समय पर धर्म परिवर्तन की घटनाएं सुनने को मिलती हैं। यही नहीं इतिहास तो इस बात का भी साक्षी है कि धर्म के नाम पर जो घृणित तथा क्रूर हत्याएं हुई हैं, उनको सुनकर एक घोर नास्तिक तथा अनीश्वरवादी मनुष्य का भी हृदय द्रवित हो उठता है।

विभिन्न धर्मों में व्याप्त संकीर्णता तथा पक्षपात पूर्ण भावना का मुख्य कारण यह है कि अधिकांश धर्मावलम्बी धर्म के यथार्थ स्वरूप को ही नहीं समझ पा रहे हैं। उन्हें यह ज्ञात ही नहीं है कि वास्तव में

धर्म के दो पक्ष होते हैं। बाहरी पक्ष को हम कर्मकांड (शरीअत) तथा उसके आन्तरिक पक्ष को अध्यात्म (रूहानियत) कहते हैं। कर्मकांड का स्वरूप मनुष्य की सामाजिक, भौगोलिक तथा स्थानीय परम्पराओं पर आधारित होता है। अतः वह भिन्न-भिन्न धर्म और समाज के लिए भिन्न-भिन्न हो सकता है। परन्तु धर्म का आन्तरिक पक्ष जिसे हम अध्यात्म (रूहानियत) कहते हैं, मनुष्य के हृदय और आत्मा की उन अनुभूतियों पर आधारित है जो सभी देश काल और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में एक समान होती हैं। परन्तु आज अधिकांश धर्मावलम्बी इस बात को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं कि हम अपने धर्म के कर्मकांड तथा आचार-नियमों के अनुसार बाहरी जीवन व्यतीत करते हुए किसी दूसरे धर्म के परमसन्त अथवा सतगुरु से अध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। किसी ईसाई के पास जाइये तो वह यही कहेगा कि हम बिना ईसाई धर्म स्वीकार किये हज़रत ईसा मसीह द्वारा बतलाये हुए प्रेम और सेवा के मार्ग पर चलकर ईश्वर के कृपा पात्र नहीं बन सकते। इसी प्रकार एक रूढ़िवादी मुसलमान यह मानने के तैयार नहीं है कि किसी दूसरे धर्म का अनुयायी बिना इस्लाम धर्म स्वीकार किये किसी मुसलमान सूफ़ी सन्त से अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण कर सकता है। यही हाल सभी धर्मों का है, चाहे वह हिन्दू धर्म हो, सिक्ख धर्म हो अथवा बौद्ध धर्म। धार्मिक क्षेत्र में फैली हुई इन्हीं सब संकीर्णताओं के कारण पारस्परिक प्रेम, सद्भावना तथा सर्वधर्म समन्वय की उदार भावना ही क्षीण होती जा रही है।

विश्व के विभिन्न धर्मों में व्याप्त इन्हीं संकीर्णताओं तथा भेदभावों को दूर करने तथा मानव समाज में एक नवीन आध्यात्मिक चेतना का सूत्रपात करने के लिए ईश्वर ने अपनी दया कृपा से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत देश में एक ऐसे महापुरुष को जन्म दिया जिन्होंने मुसलमान सूफ़ी सन्त होते हुए भी आध्यात्मिक जगत में हिन्दू जाति के दो ऐसे महारत्न अपने परम शिष्यों के रूप में तैयार किये जिनकी आध्यात्मिक शिक्षा से आज हज़ारों हिन्दू धर्मावलम्बी

अपने हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार अपना बाहरी जीवन व्यतीत करते हुए भी अध्यात्म की उन गूढ़ अनुभूतियों से लाभान्वित हो रहे हैं जो अभी तक मुसलमान सूफ़ी सन्तों की गुप्त अनमोल धरोहर बनी हुई थीं। वह महापुरुष थे महान सूफ़ी सन्त हज़रत मौलाना शाहफ़ज्ल अहमद खाँ साहिब (रहम०) और उनके परम शिष्य हिन्दू जाति के दो महारत्न परमसन्त महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज (पूज्य लालाजी महाराज) तथा परमसन्त महात्मा रघुबर दयालजी महाराज (पूज्य चच्चाजी महाराज)।

यद्यपि भारत का इतिहास यह बतलाता है कि जब से हमारे देश में मुलसमान सूफ़ी सन्तों का शुभागमन हुआ तभी से बहुत से हिन्दू इन सूफ़ी सन्तों के सत्संग तथा उपदेशों से लाभान्वित होते रहे हैं परन्तु इतिहास में कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिलता कि किसी मुसलमान सूफ़ी सन्त ने किसी हिन्दू को इस्लाम धर्म में बिना शामिल किये हुए आध्यात्मिक शिक्षा देकर उसे बैअत (दीक्षित) करते हुए अपना मुरीद (शिष्य) बनाया हो और उसे रूहानियत की तालीम देने के लिए कामिल और मुक़म्मल इज़ाज़त देकर पूर्ण समर्थ सद्गुरु की स्थिति तक पहुँचाया हो। विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में प्रथम बार इन्हीं महान सूफ़ी सन्त हज़रत मौलाना शाह फ़ज्ल अहमद खाँ साहिब (रहम०) ने यह उद्घोषणा की कि आध्यात्मिक जीवन धार्मिक बन्धनों से मुक्त है, इसलिए कोई भी व्यक्ति जिस धर्म में पैदा हुआ है उस धर्म की रीति-रिवाज़ को मानता हुआ और अपने ही धर्मशास्त्र के अनुसार जीवन व्यतीत करता हुआ किसी दूसरे धर्म के सन्त महात्मा से अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण कर सकता है। वह प्रथम मुसलमान सूफ़ी सन्त थे जिन्होंने इस बात की भी घोषणा की कि सूफ़ी सन्तों की यह गुह्य अध्यात्म विद्या प्राचीन हिन्दू ऋषियों, मुनियों की ही विद्या है, जो अब पुनः हिन्दुओं को वापस हो रही है। (इस तथ्य का उल्लेख विस्तार से आगे इसी ग्रन्थ में किया जायेगा।)

अभी तक अधिकांश हिन्दुओं में यह धारणा प्रचलित है कि आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए गृहस्थ आश्रम में रहते हुए अत्यन्त कठिन यम नियम तथा यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करना पड़ता है, जो सांसारिक व्यक्ति के लिए असम्भव सा प्रतीत होता है। परन्तु ईश्वर की असीम दया कृपा से उक्त महान सूफ़ी सन्त ने अपनी महान उदार एवं विशाल आध्यात्मिक चेतना द्वारा इस गलत धारणा को समूल नष्ट करते हुए यह सिद्ध कर दिया कि गूढ़तम आध्यात्मिक अनुभव जैसे षटचक्रों का भेदन, कुंडलिनी शक्ति का जागरण, सुषुप्ति, तुरिया तथा सहज समाधि की स्थिति उत्पन्न होना और अन्तोतगत्वा आत्म साक्षात्कार तथा ईश्वर साक्षात्कार इन सभी गूढ़तम आध्यात्मिक स्थितियों की अनुभूति एक सांसारिक व्यक्ति बिना किसी कठिन यौगिक अभ्यास के ही सरलता पूर्वक कर सकता है। ये सभी गूढ़तम आध्यात्मिक अनुभूतियाँ एक समर्थ सतगुरु के सान्निध्य और सत्संग मात्र से ही सुलभ हो जाती हैं। यही नहीं साधक को इस मार्ग में एक अपूर्व अनुभव यह भी होता है कि गुरुकृपा तथा इनके सत्संग से अनेक वासनाओं और वृत्तियों के कठोर बन्धन शनैः शनैः ढीले होते जाते हैं, जो मनुष्य के सभी प्रकार के दुःखों का मूल कारण होती हैं और इन वासनाओं के स्थान पर अन्तःकरण में सत्गुरुदेव तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, प्राणिमात्र की निष्काम सेवा एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उत्कृष्ट भाव उत्पन्न होने लगते हैं। इन महान सूफ़ी सन्त हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ साहिब (रहम०) ने हम सभी को प्रेम का वह अनूठा मार्ग बतलाया जिसकी विशेषता निम्नांकित पंक्तियों में स्पष्ट रूप से प्रकट होती है-

राहे सुलूक़ इश्क़ में, रियाज़त नहीं ज़रुर,
सौ सौ मुक़ाम होते हैं तय एक नज़र में।

(भावार्थ - प्रेम के इस साधना पथ में किसी प्रकार के योगाभ्यास की आवश्यकता नहीं है। यहाँ तो समर्थ सत्गुरु की एक कृपा दृष्टि मात्र से ही साधक का अन्तःकरण सैंकड़ों आध्यात्मिक अनुभूतियों से अनुप्राणित हो जाता है।)

इस पुस्तक में इन्हीं महापुरुष का जीवन चरित्र, उपदेश तथा उनके कुछ पत्रों को संकलित किया गया है। इस ग्रन्थ में इन महापुरुष को 'हुज़ूर महाराज' के नाम से सम्बोधित किया गया है, जिस नाम से इनके परम शिष्य महात्मा रामचन्द्रजी एवं महात्मा रघुबर दयालजी महाराज इनका ज़िक्र किया करते थे। यह महापुरुष (हुज़ूर महाराज) सूफ़ी सन्त परम्परा में नक्शबन्दिया सिलसिले के महान सूफ़ी सन्त थे। अतः इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में सूफ़ीमत तथा नक़्शबन्दिया सिलसिले का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

इस पवित्र ग्रन्थ की सामग्री संकलित तथा सम्पादित करने में जिन माननीय सत्पुरुषों के ग्रन्थों, पत्रों, पत्रिकाओं तथा दैनिक डायरियों आदि का अवलोकन किया गया है, उन सभी के प्रति यह सेवक अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है। इन सभी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं की एक सन्दर्भ तालिका इस पुस्तक के अन्त में दे दी गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का लेखक हुज़ूर महाराज के सगे भतीजे हज़रत ज़नाब ग़फ़्फार हुसैन खाँ (रहम०) तथा सगे पौत्र हज़रत ज़नाब शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब (रहम०) (इन दोनों का शरीरान्त हो गया है, परमात्मा इन दोनों आत्माओं को परम शान्ति प्रदान करें) का हार्दिक रूप से आभारी है जिन्होंने अपने कृपा पत्रों द्वारा इस लेखक को हुज़ूर महाराज तथा उनके परिवार के विषय में बहुत ही उपयोगी और महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने की कृपा की थी। यह तुच्छ सेवक इन दोनों परम पूज्य महापुरुषों के आशीर्वाद का आकांक्षी है।

यह लेखक श्रीमान् नारायणसिंह जी भाटी (जिनका देहावसान 12.04.2001 को हो गया है) का भी हार्दिक रूप से आभारी है जिन्होंने इस पवित्रग्रन्थ को **'राम समाधि आश्रम'** मनोहरपुरा (जयपुर) से प्रकाशित करने की कृपा की थी। श्री भाटी जी महर्षि अरविन्द की आध्यात्मिक सहभागिनी 'श्री माँ' के शिष्य थे। साथ ही साथ उन्होंने अपने पूज्य पिताजी महात्मा ठाकुर रामसिंह जी महाराज से सूफ़ी

सन्तों की नक़्शबन्दिया सिलसिले की साधना के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा तथा रूहानी निस्बत धरोहर के रूप में प्राप्त की थी। इस प्रकार श्री भाटीजी के व्यक्तित्व में महर्षि अरविन्द की साधना तथा नक़्शबन्दिया सिलसिले की साधना का एक बड़ा सुन्दर समन्वित रूप देखने को मिलता था।

हुज़ूर महाराज जैसी महान पाक हस्ती का जीवन चरित्र लिखना इस अधम सेवक के लिए एक दुस्साहस मात्र ही है क्योंकि इस सेवक को इस सत्यता को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि यह नाचीज़ तमाम गुनाहों और ख़ुदी का जीता-जागता नमूना है। इस सेवक ने इस ग्रन्थ की रचना किसी यश की कामना अथवा अपनी विद्वता प्रकट करने के उद्देश्य से नहीं की थी और ऐसा करने का स्वप्न में भी कभी विचार नहीं आया था। परन्तु एक विशेष अवसर पर (मार्च सन्१९७४ ई. में) पूज्य चच्चाजी महाराज की प्रेरणा और उनका आदेश मिलने पर ही नाचीज़ ने इस ग्रन्थ को लिखना आरम्भ किया था। यद्यपि उनके आदेश पालन में भी इस सेवक ने अपनी निष्क्रियता, ग़फ़लत और लगन के अभाव में लगभग सात वर्ष व्यतीत कर दिए। यही नहीं जब ग्रन्थ १९८१ में प्रकाशित हुआ तो इसके प्रकाशन के दो तीन वर्षों के भीतर ही इस ग्रन्थ की अधिकांश प्रतियाँ सत्संगी भाइयों एवं अन्य पाठकों में वितरित हो गईं। तब से बराबर कई सत्संगी भाइयों तथा पाठकों के पत्र इस ग्रन्थ की और प्रतियाँ भेजने के लिए नाचीज़ के पास आते रहते हैं।

अब दस वर्षों के अन्तराल के पश्चात इस ग्रन्थ का तृतीय संशोधित संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण के प्रकाशन के पश्चात इस ग्रन्थ के लेखक को हुज़ूर महाराज के जीवन से सम्बन्धित कुछ नवीन तथ्य सत्संगी भाइयों की डायरियों एवं पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिले तथा सूफ़ी मत की साधना और इस मत के कुछ ऐसे दार्शनिक सिद्धान्त प्रमुख विद्वान साधकों के ग्रन्थों में पढ़ने को मिले जिनका उल्लेख प्रथम संस्करण में नहीं हो

पाया था। अतः लेखक द्वारा इस द्वितीय एवं तृतीय संस्करण में इन सभी तथ्यों तथा सिद्धांतों का संक्षेप रूप में समावेश करने का यथा सम्भव प्रयास किया गया है।

अन्त में ईश्वर से यही हार्दिक विनम्र प्रार्थना है कि वह अपनी असीम दया कृपा से हम सभी को ऐसा सामर्थ्य तथा प्रेरणा प्रदान करे कि हम हुज़ूर महाराज के बतलाये हुए मार्ग पर चल कर उन्हीं के आशीर्वाद से विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के पारस्परिक मतभेदों तथा संकीर्णताओं को त्याग कर अपने सर्वांगीण जीवन को गुरुभक्ति, ईश्वरभक्ति, सार्वभौमिक प्रेम, निष्काम सेवा और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पुनीत भावना से ओत-प्रोत करते हुए उस शाश्वत शान्ति और परम पद की ओर अग्रसर हो सकें, जिसकी खोज में मानव आदिकाल से जाने या अनजाने लगा हुआ है। आमीन।

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः

विनीत

बाल कुमार खरे

पूज्य सत्गुरुजनों का चरणरज-सेवक

अनुक्रमणिका

क्रम	प्रसंग	पृष्ठ
1.	सूफ़ी मत	1
2.	सूफ़ी मत का नक़्शबन्दिया सिलसिला	13
3.	जीवन-चरित्र, जन्मभूमि और माता-पिता	21
4.	हुज़ूर महाराज के पूज्य गुरुदेव	24
5.	हुज़ूर महाराज की शिक्षा और जीविकोपार्जन	33
6.	हुज़ूर महाराज का आध्यात्मिक जीवन	36
7.	हुज़ूर महाराज के आध्यात्मिक जीवन की कुछ घटनाएँ	49
8.	हुज़ूर महाराज का स्वभाव-और व्यक्तित्व	72
9.	हुज़ूर महाराज की अमृत-वाणी	80
10.	हुज़ूर महाराज का महाप्रयाण	89
11.	हुज़ूर महाराज के पत्रों का संकलन	92
12.	हुज़ूर महाराज के छोटे भाई जनाब विलायत हुसैन खाँ साहिब (रहम०)	101
13.	हुज़ूर महाराज की सन्तान	108

क्रम	प्रसंग	पृष्ठ
14.	हुज़ूर महाराज के गुरु भाई जनाब हाफ़ी अब्दुल ग़नी ख़ाँ साहिब (रहम०)	110
15.	हुज़ूर महाराज के परम शिष्य महात्मा रामचन्द्रजी महाराज तथा महात्मा रघुबर दयालजी महाराज	115
16.	नवीन आध्यात्मिक क्रान्ति के प्रणेता - हुज़ूर महाराज	121
17.	हुज़ूर महाराज की आध्यात्मिक क्रांति का भविष्य	128
18.	हुज़ूर महाराज द्वारा रचित शब्द शरीफ़	130
19.	परिशिष्ट-क : हुज़ूर महाराज के पौत्र हज़रत शाह मंजूर अहमद ख़ाँ साहिब के हालात	140
20.	परिशिष्ट-ख : हुज़ूर महाराज के शिष्यों तथा ख़लीफाओं की सूची	143
21.	परिशिष्ट-ग : संदर्भित ग्रन्थ तथा लेखों की तालिका	147
22.	संकेताक्षरों का विवरण	150